आपातकाल में सृजन फुलवारी

कृति गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

कृति गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-129-9
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 कृति गुप्ता
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY KRITI GUPTA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	बंदी या बाध्य	6-7
2.	मजदूर	8
3.	सफ़र	9
4.	ख्वाब	10
5.	नर्क	11
6.	वो सुबह कभी तो आएगी	12
7.	इश्क	13
8.	आशा की लौ	14
9.	शहर	15
10.	वक़्त	16
11.	ये क्या हुआ	17
12.	बेनाम रिश्ता	18
13.	शरद पूर्णिमा	19
14.	त्रिमूर्ति	20
15.	प्रार्थना	21

बंदी या बाध्य

वर्किंग वुमन हूँ सो तरसती थी...
कुछ पल सुकून के मैं भी तलाशती थी
घड़ी की सुइयों सी
भागती झुंझलाती थी!
काश!
कुछ देर योग-ध्यान कर पाती
पति को कुछ तो
उनके मन का खिलाती
उफ्फ, समय ही कहाँ है
होता तो बच्चे संग बिताती,..
बस,
"काश" में ही जीती
"काश" में ही मर जाती थी!
ज़िंदगी की इस्पाती बेड़ियों में
बंदी बनी मैं कैद थी
अव्वल आने की रेस में
मैं भी यूँ मुस्तैद थी
पर ईश्वर तो वहीं था,... सुनता था मेरी दुआएं।
चुप था...पर की न उसने अनसुनी मेरी सदाएँ।

फिर

वक़्त ऐसा आया

जब मुराद हुई पूरी

अब वक़्त ही वक़्त है

भागना नहीं ज़रूरी

अब घर के बंधन में थी

पर बाध्य नहीं ज़रा भी

अपनों को पूरा वक़्त दूँ

और जी लूँ खुद को भी

ये पल चैन-ओ-सुकून के

ख़्वाब से जो रह गए थे

वो शौक और अरमान

जो कहीं दब के रह गए थे

बंधन में तो हम तब थे

रोबोट बन जीते थे जब

सूक्ष्म विषाणु ने किया मुक्त

प्रकृति और इंसान को अब!

प्रकृति ने दिया एक मौका, कोई शौक रहे न अधूरा

बंदी होगे पर बाध्य नहीं, जी लो इस समय को पूरा!

मजदूर

अपनी अभिलाषाओं के,
दिहाड़ी मजदूर हम सभी
करते है दिन रात मेहनत,
रूकते भला कहाँ कभी

आकांक्षाओं के ऊंचे किले
फ़तह करने की ये दौड़..
भागते जा रहें निरंतर,
पीछे अपना सर्वस्व छोड़ !

और क्या है मेहनताना,
इस दिन-रात की मजदूरी का?
क्या है पैमाना नापने को
ख़ुद से खुद की दूरी का??
मुझको भी बतला देना तुम
जो पता चले इस कस्तूरी का !

सफ़र

जेबखर्च से बचा कर रुपए
ले आया वो बाबा का चश्मा...
शायद बचपन अब दहलीज लांघ रहा है!

पुरानी किताब के पन्ने जो पलटे
दबे गुलाब से महक उठा घर सारा...
शायद वहाँ दबा प्यार फिर से बुला रहा है!

उम्मीदों का बोझ लेकर निकला था
पीछे छूट रही सौंधे आंगन की खुशबू....
शायद सपनों का शहर अब पास आ रहा है!

सफ़र हुआ पूरा! जो चाहा वो पाया!!
फिर भी सब लगे बेमतलब और अधूरा...
शायद गांव का पीपल अब वापस बुला रहा है!

ख़्वाब

कुछ ख़्वाब देखे थे कभी
मैंने खुली हुई आंखों से
हों पूरे वो, इस चाह में
लड़ बैठी मैं किस्मत से
पर यूं भी होता है कभी
हौसले पस्त हो जाते हैं
हारकर फिर किस्मत से
ख़्वाब दफ़न हो जाते हैं।
पर ज़िन्दगी भी अजीब है
ले आए फिर उस मोड़ पर
उठा देती सोए ख्वाब फिर
गहरी नींद से झकझोर कर
ये ख़्वाब हैं वो ख़्वाब नहीं
जो बस नींद में ही आते हैं
ये ख्वाब जीने का मकसद
ये ही अब जीवन सजाते हैं
फिर शुरू जंग किस्मत से
कि ख़्वाब ये मुक्कम्मल हो
किस्मत का मुँह ना ताकूँ मैं
ये हुनर ही इतना काबिल हो!!

नर्क

देखो! ग्यारह बज गये माँ !

चलो कहीं पर छिप जाएँ

बापू बस अब आते होंगे

आज तो उनसे बच जाएँ

फिर मार -पीट के शोर में

हम आज भरे मोहल्ले में

तमाशा बन ही ना रह जाएँ

गहने, रुपये सब चले गए

हम भी जुए में ना बिक जाएँ

यहाँ हुकूमत है आतंक की

क्या हर बार पैरों में गिर जाएं?

अब तो बचा लें स्वाभिमान

माँ, चल इस नर्क से निकल जाएँ !!

वो सुबह कभी तो आएगी

सपनों में सोचा करते थे
वो सुबह कभी तो आएगी
सुबह की भागमभागी में
जब साँस सुकूँ की आएगी
एक शाम अनोखी होगी वो
जब अपने सारे संग होंगे
हँसलें,बोलें सब साथ साथ
खुशियों के सुर्ख रंग होंगे
जब हवा बहेगी यूँ ताज़ी
गौरैया आँगन में चहकेगी
साथी के साथ से बने हुए
पकवान से रसोई महकेगी
सपनों में सोचा करते थे
वो सुबह कभी तो आएगी
मशीन नहीं हम मानव हैं
ये बात समझ में आएगी
और देखो कैसा जादू हुआ
हर मुराद हो गयी अब पूरी
वो सुबह देखो आ ही गयी
अपनों से खत्म हुई दूरी
वक़्त है खुद से मिलने का
एक दूजे का साथ भी है
जो लौटा है,वो भी बना रहे
अब करना ये प्रयास भी है!!

इश्क़

हाँ, जानती हूँ इश्क़ के नाम
सिर्फ एक दिन करने से
उसकी गहराई नाप नहीं सकते

जानती हूँ ये लाल गुलाब
और स्वरोस्की के कंगन
इश्क़ का मोल आंक नहीं सकते

जानती हूँ सड़कों पर यूँ
बस हाथों में हाथ डालकर
एक दूजे का मन भांप नहीं सकते

तभी, हर दिन तुमको गुनती हूँ
धड़कन में तुमको सुनती हूँ
तुमने मुझसे मुझे मिलाया है
हर हर्फ़ नाम तुम्हारे करती हूँ

तुम्हारी वीकेंड वाली चाय की
गर्माहट में गुम सी होती हूँ
"मैं हूँ ना!" जब तुम कहते हो
एक जंग फ़तह मैं करती हूँ

लफ़्ज़ों में कब बयाँ किया मैंने
बस आँखों से तुमको पढ़ती हूँ
ज़िंदगी से चुरा कर कुछ पल
इस इश्क़ को जिया करती हूँ!!

आशा की लौ

बहना मेरी चल जला लें
एक दीपक आशा का
होगा, कल ज़रूर होगा
अंत घनघोर निराशा का
दिन फिर बहुरेंगें तेरे मेरे
इस पेट में दाना जाएगा
हर एक हाथ देश में जब
मदद को आगे आएगा
देखो न, भाई सब अपने
कम में हैं काम चला रहे
अपनी मस्ती में जीते थे
परहित को आगे ला रहे
जान की चिंता न करते
बने आसरा मजबूर का
पत्थर जिनको कहते थे
निकले हीरा कोहिनूर का
आशा की लौ जलने से ही
ये घोर अंधेरा सिमटता है
बस, देखती जा बहना तू
ये समय कैसे पलटता है !!

शहर

जवान इठलाते इश्क़ से लेकर
बूढ़ी झुर्रियों की तन्हाई तक
हताश बेरोजगारी से लेकर
चोटी की अकेली फतह तक
इस शहर को वीरान होते देखा है मैंने
इसे जीता कब्रिस्तान होते देखा है मैंने

पर आशा से आकाश थमा है
आशा का ही ये दीप जला है
शहर फिर बसें,ये ख़्वाब देखा है मैंने
रूह फिर जगे, ये ख़्वाब देखा है मैंने
हों अब साथ सब
आँचल से छूटे बचपन से लेकर
काँपती, थरथराती झुर्रियों तक
शोहरत के ऊँचे किलों से लेकर
झुग्गी में धड़कते दिलों तक !!

वक़्त

कुछ वक़्त पहले तक वो दौर था कि जब
बिना कहे मेरे कुछ तुम सब समझ जाते थे
फिर कुछ वक़्त और बीता
अब ये दौर है कि जब
कहने पर ही मेरे कुछ तुम कुछ-कुछ समझ पाते हो
यूं देखो तो पहले से अब और ज़्यादा मैं खुल गई हूं
पहले से और ज़्यादा अब तुममें मैं घुल गई हूं
शायद इसलिए भी बेख़ौफ़ हो सब कुछ कहती जाती हूं
पर अब तुम्हें ना जाने क्यों उकताया हुआ सा पाती हूं
यूं भी अब ये हो चला कि ख़ामोशी ही गुफ्तगू हो गई
एक दूसरे का मन सुने बीत जाते हैं दिन कई-कई
अब तुम भी तब ही सुनते हो गर लफ़्ज़ों में कुछ कह दिया
कभी कभी तो यूं लगे सुन कर भी अनसुना कर दिया
अब धीरे धीरे एक डर मन में समाता जाता है
इस शोर भरी ज़िन्दगी में सन्नाटा ही पसरा ना रहे
वो दौर भी ना आजाए कि कुछ कहना-सुनना बाकी ना रहे
काश, उड़ जाऊं उस दौर में जब तुम गुनगुनाया करते थे
"तुम सोच भर लो मैं सब समझ जाऊंगा,
तुम्हारी आंखों से ही मन तुम्हारा पढ़ता जाऊंगा"
जब तुम्हारे ये कहते ही मन मयूर नाच जाते थे
जब थोड़ा भी कुछ कहूं तो तुम पूरा समझ जाते थे।

ये क्या हुआ

ख़्वाब ऊंचे ऊंचे पाले थे
हर एक ख़्वाब अब बस
शगूफा साबित हो रहा है

ज़िन्दगी ने बादशाहत है
ऐसे छीनी कि अब बस
गुज़र बसर ही हो रहा है

मंज़िल की चाह में थे हम
निकले बहुत दूर घर से
मंज़िल का अता पता नहीं
बस सफ़र ही सफ़र हो रहा है!

बेनाम रिश्ता

जब मिले थे तब सोचा ना था
कुछ पनप सकेगा बीच हमारे
कॉलेज के कुछ नोट्स ही तो थे
जो इस रिश्ते का ज़रिया बने
इस रिश्ते को बहुत सच्चाई और
प्यार से सींचा था हमने
फिर भी ये प्यार, मोहब्बत की,परिभाषा से कोसों दूर था!
बड़ा बेनाम सा रिश्ता था ये
पर ज़िन्दगी सजती थी इससे!
दोस्तों ने बहुत कोशिश की
कि खोद निकालें वो राज़..
राज़ उस पनपते एहसास का
जिसे बांधा नहीं जा सकता था किसी नाम में..
दोस्ती से कुछ ज़्यादा था
पर इश्क़ से काफ़ी कम था ये
सीधा सादा सा रिश्ता हमारा
पता नहीं क्यों औरों को वो
दिख जाता था उसमें जो था ही नहीं हमारे बीच...
याद है कैसे घंटों बैठ हम
उन मासूम, हैरान चेहरों पर हंसते!!
सोचती हूं कभी कभी, आख़िर क्यों
हर रिश्ते को नाम दिया जाता है?
क्यों आख़िर रिश्तों को नाम की कैद से
आज़ाद नहीं किया जाता है?
क्यों नहीं आख़िर इन अनमोल एहसासों को पूरी शिद्दत से
सिर्फ जीया और जीया जाता है?
ये रिश्ते इतने सीधे सादे ही तो हैं
क्यों इन्हें उलझा उलझा कर
ज़िन्दगी को बदनाम किया जाता है?

शरद पूर्णिमा

शहरी अट्टालिकाओं ने
ऐसा ढँक दिया आकाश
शरद पूर्णिमा का चाँद
बोलो, आए कैसे पास?

बोलो, आए कैसे पास
ले चाँदनी दुग्ध - धवल
अब न आंगन बचे न छत
पाए कहाँ अर्घ्य का जल ?

पाए कहाँ अर्घ्य का जल
जल भी तो हुआ दूषित
लक्ष्मी भी विचरें कैसे ?
हवा, मिट्टी भी प्रदूषित

हवा, मिट्टी भी प्रदूषित
अब करनी होगी निर्मल
मन भी निर्मल हो जाए
तो मिले पूर्णिमा का फल !!

त्रिमूर्ति

अरे! डॉक्टर तो बस
कमाएँ पैसा अंधा
करते हैं दिन रात
ये डर का ही धंधा

अरे! पुलिस वालों को
क्या ही कहना
गुंडों से बड़े हैं ये..
घूस इनका गहना

अरे! सफाई कर्मचारी
कहाँ कोई काम करते
थक गया मैं तो अब
शिकायत करते करते

ये सोच, ये शब्द
गूँजते हैं समाज में
ढूँढते हैं हम सदा ही
खोट दूजे के काज में

पर आज जब आया
संकट देश पे भारी
इन्हीं तीन स्तंभों से
आस लगी है सारी!

कोरोना जैसी वीभत्स
फैली है जो महामारी
निपटने को है तैयार
ये वीर त्रिमूर्ति हमारी

डॉक्टर, पुलिस और
हमारे स्वच्छता सेनानी
आज भारत माँ के इन
वीरों की कीमत जानी!!

निकले हैं देश बचाने
सब मोह माया त्याग
इन वीरों को करो नमन
अब तो जाओ जाग

इनके जज़्बे का तुम
अब तो कुछ मान करो
"घर" के ही अंदर बैठो
बस इतना एहसान करो

कोरोना को मिलकर
है अब तो बस हराना
भारत की एकता शक्ति
अब विश्व को है दिखाना!!

प्रार्थना

संतान के सिर से सब
संताप जो सदैव ले हर
न जादू है न टोना कोई
मां की प्रार्थना में है वो असर!

यम के हाथ से खींच ले
प्राण, पति हो जाए अमर
न माया है न लीला कोई
सती की प्रार्थना में है वो असर!

ब्रह्मांड भी गूँज उठे ऐसे
विश्वास से भरो अपने स्वर
न संशय हो न दुविधा कोई
स्वयं की प्रार्थना में हो वो असर!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

कृति गुप्ता

E-mail - kritiguptablog@gmail.com

Mobile - 9818991159

एक अनिश्चित सा दौर... कोरोना के संक्रमण से आतंकित, सशंकित हर हृदय... आपातकाल की घोषणा... और २१ दिनों के लिए हर कोई अपने घर की सीमा में बंद!

ऐसा लगने लगा जैसे हम अपने ही घर में बन्दी बन गए हों! पर कभी सोचा क्या, हम बंधन में जरूर हैं पर बाध्य नहीं हैं!

इस अनिश्चित दौर में मन को निराश, हताश करने को बिल्कुल बाध्य नहीं हैं और इसलिए ही इस समय हृदय में उमड़ते अनेक भावों को शब्दों में पिरो लेना, उन्हें साकार रूप देना, शब्दों से आशा की लौ जलाना, समय का सदुपयोग ही नहीं... एक लेखक की नैतिक जिम्मेदारी भी है!

इस संकलन में कुछ रचनाएँ समसामयिक भी हैं और कुछ समय के बंधन से मुक्त निरंतर बहती भावनाएं भी!

रचनाओं का मर्म आप तक पहुंचे, ऐसी कामना के साथ!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-129-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/